

Asjad B. Alvi

## MAKING HOUSES AFFORDABLE: An alternative finance model for low income Housing

It is a myth that the slum dwellers live in such conditions because of lack of money. It is the existing financial mechanisms that hinder the urban poor to attain a respectable shelter. It had been found that the slum dwellers can pay upto Rs. 4 lakh for better shelter. If this potential is properly utilized, it can provide better housing for a more equal society. Want to know how this can be done? Walk up to "MAKING HOUSES AFFORDABLE"

यह एक मथिक है कि झुग्गी वासिं पैसे की कमी के कारण इस तरह की स्थिति में रहते हैं। मौजूदा वित्तीय तंत्र शहरी गरीब की सम्मानजनक शरण पाने की चेष्टा के लिए एक बाधा है। यह पाया गया कि झुग्गी वासिं बेहतर आश्रय के लिए 4 लाख रुपये तक का भुगतान कर सकते हैं। हम इस क्षमता के उपयुक्त उपयोग से एक बेहतर समाज प्राप्त कर सकते हैं। यह कैसे किया जा सकता जानना चाहते हैं? "मकान कफियती बनाने" की ओर चलते हैं।

Tanya Dwivedi

## DISASTERS IN DELHI: Planning for Local Level Disaster Resilience

India's disaster management efforts have largely consisted of rescue and rehabilitation efforts after a disaster has struck. There is a need to understand that hazards like earthquake, flood etc. are natural phenomenon and disaster losses are preventable, if initiatives are taken to increase disaster resilience of an area before the hazard turns into disaster. My research identifies components of Disaster Resilience and ranks six areas in Delhi according to their level of Disaster Resilience.

भारत में मुख्यतः आपदा प्रबन्धन प्रयास आपदाओं के पश्चात किये जाते हैं जिसमें काफी हद तक बचाव कार्य एवं पुर्नवास प्रयास सम्मिलित होते हैं। वर्तमान में हमें आपदाओं के पूर्वानमान के आधार पर इस प्रकार की आपदाओं जैसे भूकम्प, बाढ़ आदि एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं को समझकर उचित कदम उठाने की आवश्यकता है जिससे उनसे होने वाली हानि अथवा जोखिम को कम किया जा सके। इस शोध में मेरे द्वारा आपदा के प्रबन्धन हेतु आपदा के घटकों की पहचान की गई तथा उन घटकों के आधार पर दिल्ली के 6 क्षेत्रों का आंकलन किया गया है।

Divyakumar Garg

## Neeche dukaan, upar makaan - Home Based Enterprises in Low Income Housing

Home Based Enterprises are small, capital saving and labour intensive enterprises in nature. They are a solution generated by opportunity deprived (poor or uneducated) families for their living. My research aims on studying their economic and spatial linkages and their impact on living environment with focus on socio-economic, housing, health and environment aspects.

गृह आधारित उद्यम- छोटे, पूंजी की बचत करने और प्रकृति में श्रम सघन वाले उद्यम होते हैं। वे अवसर वंचित (गरीब या अशिक्षित) परिवारों द्वारा रहने के लिए उत्पन्न एक समाधान हैं। मेरे शोध का उद्देश्य उनके आर्थिक और स्थानिक संबंधों के साथ उनके सामाजिक - आर्थिक, आवासीय, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय पहलुओं पर ध्यान देते हुए जीवन के माहौल पर उनके प्रभाव का अध्ययन करना है।

## Manisha Singh and Rohit Kumar

### Houses for whom? Slum development as strategy for housing shortage

This project attempts to solve the housing problems in Raipur by focusing on slums which constitute 36% of the city's population. Focusing on the development of slums will help to cover 70% of the housing shortage. This is achieved through in-situ up-gradation, relocation and redevelopment strategies.

रायपुर की आबादी का 36% मलनि बस्तियों में रहते हैं।

इससे परियोजना मलनि बस्तियों पर ध्यान केंद्रित करके रायपुर में आवास की समस्याओं को हल करने के लिए प्रयास करता है। इससे आवास की कमी का 70% प्रदान करने में मदद मिलेगी। समाधान यथास्थान उन्नयन, स्थानांतरण और पुनर्विकास रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

## Swati Talwar

### MIXED (AB)USE: Implications of mixed use development in the city

Mixed use development has existed in our historic cities, prevails today and is being planned for future development. The thesis compares outcome of this strategy in two scenarios; one in a planned way and other in an organic. The planned path leads to bare minimum issues while the other results in varied issues like pollution, infrastructure stress, traffic congestion, health and safety. Mixed use development can be both a boon and a bane; the path we choose will decide what it is going to be.

मशरति उपयोग वकिस के अतीतए वर्तमान और भवषिय असतत्व में है। शोध प्रबंध दो स्थतियों में इस रणनीति के नतीजे की तुलना करता है। सुनयोजति तरीके से और जैवकि । नयोजति मार्ग न्यूनतम मुद्दों को जन्म देता है एजबकि प्रदूषणए बुनयिदी सुवधियों के तनावए यातायात भीड़ए स्वास्थय तथा सुरक्षा जैसे वभिन्न मुद्दों अनयोजति मार्ग के परिणाम है। मशरति उपयोग वकिस के लिए एक वरदान और अभशाप दोनों हो सकता हैए जसि मार्ग को हम चुनते हैं वह तय करेगा कयिह फायदा या नुकसान होगा।

## Chirag Chutani

### Is it safe to cross the road? Assessing the quality of Pedestrian Facilities

Pedestrian facilities and related research has for a long time been a neglected study area in India. The lack of knowledge and adequate interventions has led to rise in risk taking behaviour of pedestrian while crossing the road. My research work aims at formulating standards for assessment and provision of improved pedestrian facilities.

पैदल चलने वालों की सुवधि एवं संबंधति अनुसंधान एक लंबे समय भारत में एक उपेक्षति अध्ययन का क्षेत्र रहा है, इससे सड़क पार करते समय पैदल यात्री के व्यवहार में जोखिम लेने में वृद्धि हुई है

यह अनुसंधान कार्य पैदल यात्री के सेवा के स्तर (L.O.S) के आकलन और प्रावधान के लिए मानकों को तैयार करता है।

## Chharing Namdol Bodh

### Let's go by bus - Transport Planning for town and city tourism

For many years now, tourism has been playing an important role in the development of India. But little has been done from the government's end to promote tourism in a sustainable and a more regulated way. Among the major factors that could help in achieving this goal is the TRANSPORT SYSTEM of a tourist place. The thesis work explores the perspective of a tourist and expertise of a transport planner in developing a transport system of a resort town in a way that can help in promoting tourism in a more regulated way.

गत वर्षों में पर्यटन ने भारत के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परंतु यह महसूस किया गया है कि भारतीय सरकार के द्वारा पर्यटन की इस भूमिका का प्रतिदिन करने हेतु और पर्यटन के वनियमति तथा नरितर विकास के लिए उचित कदम नहीं उठाए गए हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जनि प्रमुख कारकों के विकास की जरुरत है उनमें से परविहन व्यवस्था एक है। इस शोध कार्य का लक्ष्य एक पर्यटक के नजरिये तथा एक परविहन योजनाकार की विशेषज्ञता का समावेश करते हुए एक पर्यटन स्थल के लिए उचित परविहन व्यवस्था के विकास की प्रणाली का निर्माण करना है।

### Rahul Verma

### It's not just a STOP, it's a DESTINATION: Integrated development of a Metro Corridor

The physical structure of a city, its size and sprawl, its way of life and character, all are dependent upon the nature and quality of Urban Transport System. My research aims at decentralizing the overcrowded core area of a city by integrating it with development of a Metro Corridor.

एक शहर की भौतिक संरचना, उसके आकार और फैलाव, जीवन और चरित्र की अपनी तरह से, सभी शहरी परविहन प्रणाली की प्रकृति और गुणवत्ता पर निर्भर हैं। मेरे शोध एक शहर के अधिकि भीड़भाड़ वाले मुख्य क्षेत्र को विकेंद्रीकरण करना है। मेट्रो कॉरिडोर के आयोजित विकास के सहायता से मेट्रो स्टेशनों को विकास क्षेत्र के अनुरूप संभावित इलाको के जैसा देखा जा रहा है।

### Purushottam Jadhav

### How wet is Water Footprint? Strategies for urban-regional water management

In recent years it has become clear that local water depletion and pollution are one of the most upcoming critical issues. This thesis focuses on understanding the water footprint scenario of Pune region and the extent to which it can be reduced. The study reveals the importance of analysis of the water footprint of a region to get a complete picture of the relation between water availability and the use of water resource.

हाल के वर्षों में यह स्पष्ट हो गया है कि, स्थानीय पानी की कमी और प्रदूषण सबसे आगामी महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है। यह शोध पुणे क्षेत्र की पानी पदचिह्न परदृश्य और जसि हद तक इसे कम किया जा सकता है इस पर केंद्रित किया गया है। पानी की उपलब्धता और जल संसाधन के उपयोग के बीच संबंध की एक पूरी तस्वीर प्राप्त करने के लिए किसी क्षेत्र के पानी पदचिह्न का विश्लेषण करने के महत्व का इस अध्ययन से पता चलता है।

## Bhavna Solanki

### A port is not just a port - The potential of ports for fostering regional and urban development

The research deals with integration of port development with its hinterland. A port is seen as an opportunity to create localized centres of trade and employment. Thus the study attempts to analyse the factors responsible for integrated port and hinterland development and proposes planning intervention to achieve a holistic regional development.

बंदरगाह राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अनविर्य बुनादी ढाचे है। एक सफल कार्यलीन बंदरगाह न सर्फि रोजगार पर आय भी उत्पन करता है। इसलए यह थसिसि बंदरगाह के आस पास के क्षेत्र के वशिलेशन संबंधति अर्थकि एवं संयोजकता और इस तरह के विकास के स्थानयि प्रभाव के शोध पर सथति है।

## Sarang Goel

### Cities save electricity! – Planning urban energy management

Cities are big energy guzzlers. There is a need to manage it and this can be done through efficient planning and architecture, to some extent. But, the ultimate onus lies on citizens, as every individual (and his habits) matter.

शहरों की ऊर्जा खपत अत्यधिक है। इसे प्रबंधति करने की जरूरत है और यह कुछ हद तक कारगर योजना और वास्तुकला के माध्यम से कथि जा सकता है। लेकिन, अंतमि जम्मेदारी नागरिकों पर है क्युंकी हर व्यक्ति (और उसकी आदतों) का खपत पर असर पड़ता है।

## Varun Kakkara and Vinayak V.P.

### SOCHalaya: Thinking Toilets

With the mandate that Design has the potential to improve the quality of life, preserve the environment, reduce disease and uphold human dignity, the Design Studio of Industrial Design, with its 19 students spent 10 weeks reinventing Sanitation Solutions and the Toilet itself.

The attempt of this exercise was to knit together our understanding of human behaviour, habits, our diverse socio-cultural contexts, economic considerations and advancement in technology to arrive at design interventions that address areas in sanitation and hygiene, which are peculiar and specific to our context.

यह जनादेश के साथ कडिजिइन में जीवन की गुणवत्ता में सुधार, पर्यावरण की रक्षा, रोगो को घटाना और मानवीय गरमि को बनाए रखने की क्षमता है, डिजिइन स्टूडियो औफ इंडस्ट्रीयल डिजिइन ने, अपने 19 छात्रों के साथ, स्वच्छता समाधान और शौचालय को फरि से गढने के लए 10 सप्ताह बतिए।

इस अभ्यास का प्रयास मानव व्यवहार, आदतों, हमारे वभिन्नि सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों, आर्थिक आधार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नतिके बारे में हमारी समझ के साथ जोड़ना और फरि डिजिइन व्यवधान पर पहुंचना जो वशिष्टि सफाई और स्वच्छता के मुद्दों से सम्बंधति है था